03.12.2020

प्रो. सागरमल जैन को श्रद्धांजलि अर्पित की गई

- **प्राकृत भाषा पर कार्यों के कारण मिला था राष्ट्रपति पुरस्कार**
- **सांची विश्वविद्यालय की साधारण एवं कार्यपरिषद के सदस्य थे**
- **30 नवंबर को संथारा ग्रहण किया था**

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में प्राकृत भाषा एवं जैन साहित्य के उद्भट विद्वान प्रो. सागर मल जैन को श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। प्रो. सागरमल जैन को 'गुरुओं के गुरु के रूप में जाना जाता था। 50 से अधिक जैन साधु-साध्वियों ने प्रो. सागरमल जैन के नेतृत्व में पी.एच.डी की थी। वे पाली और प्राकृत दोनों ही भाषाओं के ज्ञाता और विद्वान थे। सांची विश्वविद्यालय की परिकल्पना के समय से ही प्रो. सागरमल जैन विश्वविद्यालय से जुड़े हुए थे। वे विश्वविद्यालय की साधारण परिषद एवं कार्यपरिषद के सदस्य थे। प्राकृत भाषा पर उनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार भी मिल चुका था।

प्रो. सागरमल जैन की श्रद्धांजलि सभा में सांची विश्वविद्यालय के कुलसचिव, अधिष्ठाता, सभी प्राध्यापक और अन्य अधिकारी-कर्मचारी सम्मिलित हुए। इस शोक अवसर पर कुलसचिव श्री अदिति कुमार त्रिपाठी ने कहा कि अपनी वृद्धावस्था के बाद भी विश्वविद्यालय संबंधी किसी भी कार्य के लिए प्रो. सागरमल जैन सक्रिय रूप से अपना सहयोग प्रदान करते थे। वे ज्ञान, शोध और पठन-पाठन के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए इतने अधिक आतुर होते थे कि प्रत्येक शोधार्थी को पर्याप्त सहायता उपलब्ध कराते थे। विश्वविद्यालय के बौद्ध अध्ययन विभाग के सहायक प्राध्यापक श्री संतोष प्रियदर्शी का कहना था कि विश्वविद्यालय के पाली भाषा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित विभिन्न ग्रंथों के अध्ययन में यदि विभाग के शिक्षकों को किसी भी प्रकार की परेशानी उतपन्न होती थी तो वो प्रो. सागरमल जैन जी से फोन पर ही उसका समाधान उनसे पूछ लेता था। प्रो. जैन ने कई किताबें और शोध पत्र व लेख लिखे हैं जो ऑनलाइन sagarmaljain e-pustkalay पर उपलब्ध हैं।

88 वर्ष के प्रो. सागरमल जैन ने अस्वस्थता के चलते 30 नवंबर को संथारा ग्रहण किया था।

ई-पेपर
दैनिक भास्कर

Raisen Bhaskar Date 4 Dec,2020

50 से अधिक जैन साधु-साध्वियों को पीएचडी कराने वाले प्रो. सागरमल जैन को दी श्रद्धांजलि

रायसेन | सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में प्राकृत भाषा एवं जैन साहित्य के विद्वान प्रो. सागर मल जैन को श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। प्रो. सागरमल जैन को गुरुओं के गुरु के रूप में जाना जाता था। 50 से अधिक जैन साधु-साध्वियों ने प्रो. सागरमल जैन के नेतृत्व में पीएचडी की थी। वे पाली और प्राकृत दोनों ही भाषाओं के ज्ञाता और विद्वान थे। सांची विवि की परिकल्पना के समय से ही प्रो. सागरमल जैन विश्वविद्यालय से जुड़े हुए थे। वे विवि की साधारण परिषद एवं कार्यपरिषद के सदस्य थे। प्राकृत भाषा पर उनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार भी मिल चुका है।

प्रो. सागरमल जैन की श्रद्धांजलि सभा में सांची विवि के कुलसचिव, अधिष्ठाता, सभी प्राध्यापक और अन्य अधिकारी-कर्मचारी सम्मिलित हुए। कुलसचिव अदिति कुमार त्रिपाठी ने कहा कि विश्वविद्यालय संबंधी किसी भी कार्य के लिए प्रो. सागरमल जैन सक्रिय रूप से अपना सहयोग प्रदान करते थे। प्रो. जैन ने कई किताबें और शोध पत्र व लेख लिखे हैं । जो ऑनलाइन 4 पर उपलब्ध हैं। 88 वर्ष के प्रो. सागरमल जैन ने अस्वस्थता के चलते 30 नवंबर को संथारा ग्रहण किया था।

दिनांक 21.12.2020

गीता के 'ज्ञान' एवं 'कर्म' योग पर होगी चर्चा

- सांची विश्वविद्यालय द्वारा ऑनलाइन संगोष्ठी आयोजित
- 22 दिसंबर, 2020 को दोपहर 0200 बजे से 0330 बजे तक आयोजन

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय द्वारा "भगवद्गीता के परिप्रेक्ष्य में ज्ञानयोग एवं कर्मयोग का अनुशीलन " विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी आयोजित की जा रही है। सांची विश्वविद्यालय के भारतीय दर्शन विभाग द्वारा ये ऑनलाइन संगोष्ठी कल यानी 22 दिसंबर 2020 को गूगल मीट पर दोपहर 0200 बजे से 0330 बजे तक आयोजित होगी।

अनुशीलन का अर्थ होता है 'साधना' या 'अभ्यास'। इस ऑनलाइन संगोष्ठी में इस बात पर गहन चर्चा की जाएगी कि किस प्रकार से एक व्यक्ति के जीवन में 'ज्ञान' एवं 'कर्म' दोनों का सामन्जस्य होना आवश्यक है और इसी सामन्जस्य से व्यक्ति पूर्ण होकर मोक्ष को प्राप्त करता है।

छत्तीसगढ़ – अंबिकापुर के श्रीरामकृष्ण विवेकानंद सेवा आश्रम के सचिव स्वामी तन्मयानंदजी गीता में उल्लेख किए गए 'ज्ञान योग' के माध्यम से जीवन में अभ्यास के गुणों पर चर्चा करेंगे। जबकि, कोलकाता स्थित रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ के स्वामी यज्ञधरानंदजी गीता में उल्लेखित 'कर्मयोग' के माध्यम से श्रोताओं/दर्शकों को बताने का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार से इसका अभ्यास एक सामान्य व्यक्ति भी अपने जीवन में कर सकता है।

इस ऑन लाइन आयोजन की अध्यक्षता सांची विश्वविद्यालय के कुलपति एवं म.प्र शासन संस्कृति विभाग एवं जनसंपर्क विभाग के प्रमुख सचिव श्री शिव शेखर शुक्ला करेंगे। आप सभी इस संगोष्ठी में आमंत्रित हैं। इस लिंक के माध्यम से आप ऑनलाइन संगोष्ठी में सम्मिलित हो सकते हैं-http://meet.google.com/qff-tyio-esq

12 नवदुनिया
भोपाल, मंगलवार 22 दिसंबर, 2020

गीता के ज्ञान व कर्म योग पर सांची विवि की ऑनलाइन संगोष्ठी आज

रायसेन (नवदुनिया प्रतिनिधि)। सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय द्वारा भगवत गीता के परिप्रेक्ष्य में ज्ञानयोग एवं कर्मयोग का अनुशीलन विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी आयोजित की जा रही है। सांची विश्वविद्यालय के भारतीय दर्शन विभाग द्वारा यह ऑनलाइन संगोष्ठी 22 दिसंबर को दोपहर 2 बजे से 3:30 बजे तक आयोजित होगी। अनुशीलन का अर्थ होता है साधना या अभ्यास। इस ऑनलाइन संगोष्ठी में इस बात पर गहन चर्चा की जाएगी कि किस प्रकार से एक व्यक्ति के जीवन में ज्ञान एवं कर्म दोनों का सामंजस्य होना आवश्यक है और इसी सामन्जस्य से व्यक्ति पूर्ण होकर मोक्ष को प्राप्त करता है। छत्तीसगढ़ अंबिकापुर के

गीता के ज्ञान व कर्मयोग पर होगी ऑनलाइन संगोष्ठी। ● नवदुनिया

श्रीरामकृष्ण विवेकानंद सेवा आश्रम के सचिव स्वामी तन्मयानंद गीता में उल्लेख किए गए ज्ञान योग के माध्यम से जीवन में अभ्यास के गुणों पर चर्चा करेंगे। जबकि कोलकाता स्थित रामकृष्ण मिशन बेलूर मठ के स्वामी यज्ञधरानंद गीता में उल्लेखित कर्मयोग के माध्यम से श्रोताओं, दर्शकों को बताने का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार से इसका अभ्यास एक सामान्य व्यक्ति भी अपने जीवन में कर सकता है। इस ऑन लाइन आयोजन की अध्यक्षता सांची विश्वविद्यालय के कुलपति एवं म.प्र शासन संस्कृति विभाग एवं जनसंपर्क विभाग के प्रमुख सचिव शिव शेखर शुक्ला करेंगे। सांची विवि बौद्ध व हिंदू दर्शन पर समय-समय पर इस तरह की संगोष्ठी व परिचर्चा आयोजित करता है। दर्शन व आध्यात्म को लेकर यहां स्नातकोत्तर और शोध कार्य भी किए जा रहे हैं।

दिनांक 23.12.2020

प्रेस विज्ञप्ति

‘गीता संपूर्ण विश्व के लिए उपयोगी ग्रंथ'- सांची विवि में संगोष्ठी

- ‘गीता, उपनिषद और रामचरितमानस को आमजन तक पहुंचाना आवश्यक’
- “भगवद्गीता के परिप्रेक्ष्य में ज्ञानयोग एवं कर्मयोग का अनुशीलन ” पर ऑनलाइन संगोष्ठी
- ‘युवा पीढ़ी गीता से जुड़कर अपना कल्याण कर सकती है'
- ‘व्यक्ति की पात्रता के अनुसार रास्ता बताती है गीता’
- ‘गीता में ‘ज्ञान’ एवं ‘कर्म’ के मार्गों में से कोई भी बड़ा या छोटा नहीं’
- ‘व्यक्ति अपने साधारण कर्मों के माध्यम से ही सिद्धि प्राप्त कर सकता है’

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में “भगवद्गीता के परिप्रेक्ष्य में ज्ञानयोग एवं कर्मयोग का अनुशीलन ” विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी संपन्न हुई। विश्वविद्यालय के कुलपति एवं म.प्र शासन संस्कृति विभाग तथा जनसंपर्क विभाग के प्रमुख सचिव श्री शिव शेखर शुक्ला ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि गीता, उपनिषद तथा रामचरितमानस जैसे ग्रंथों को आमजन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्री शुक्ला के मुताबिक इन ग्रंथों को इतना अधिक व्यापक किया जाना चाहिए कि युवा पीढ़ी इनसे जुड़कर अपना कल्याण कर सके।

श्री शिव शेखर शुक्ला का कहना था कि गीता, भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए उपयोगी है क्योंकि यह व्यक्ति की पात्रता के अनुसार ज्ञान, कर्म, भक्ति और ज्ञान योग का रास्ता बताती है। उनका कहना था कि गीता में वर्णित 'ज्ञान' एवं 'कर्म' योग के मार्गों में से कोई भी बड़ा या छोटा नहीं है और जीवन के विभिन्न पड़ावों जैसे -बाल अवस्था, युवा अवस्था, प्रौढ़ अवस्था इत्यादि में अपने ज्ञान एवं अनुभव के अनुसार व्यक्ति इन योगों को प्राप्त करता है।

सांची विश्वविद्यालय के भारतीय दर्शन विभाग द्वारा आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता और छत्तीसगढ़ – अंबिकापुर के श्रीरामकृष्ण विवेकानंद सेवा आश्रम के सचिव स्वामी तन्मयानंदजी ने कहा कि 'ज्ञान योग ही विचार मार्ग है' और ज्ञानी व्यक्ति समस्त कामनाओं का त्याग कर आत्मा में रमता है तथा ऐसे आत्मलीन ज्ञानी ही शांति को प्राप्त करते हैं।

कोलकाता स्थित रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ के स्वामी यज्ञधरानंदजी ने गीता में उल्लेखित ‘कर्मयोग’ पर केंद्रित अपने व्याख्यान में बताया कि ईश्वर के प्रति समस्त कर्मों को अर्पित करके किया जाने वाला कर्म ही कर्मयोग है। उनका कहना था कि ईश्वर अर्पण बुद्धि से ही कर्मों में पूर्णता आती है तथा व्यक्ति अपने साधारण कर्मों के माध्यम से ही सिद्धि प्राप्त कर सकता है....ईश्वर का स्मरण करते हुए कर्मों को करने से कर्मों में पूर्णता प्राप्त होती है।

ऑनलाइन संगोष्ठी के संयोजक और सांची विश्वविद्यालय के भारतीय दर्शन विभाग के प्रमुख डॉ नवीन दीक्षित ने कहा कि योग दरअसल आत्मा का परमात्मा से मिलन है और गीता के अनुसार यह जुड़ाव ज्ञान, कर्म एवं भक्ति के द्वारा हो सकता है।

पत्रिका.
भोपाल, गुरुवार, 24 दिसंबर, 2020

आयोजन

गीता संपूर्ण विश्व के लिए उपयोगी ग्रंथ : शुक्ला

सांची विवि में ऑनलाइन संगोष्ठी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायसेन. सांची बौद्ध, भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में भगवत-गीता के परिप्रेक्ष्य में ज्ञानयोग एवं कर्मयोग का अनुशीलन विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी आयोजित हुई।

इसमें विश्वविद्यालय के कुलपति एवं संस्कृति तथा जनसंपर्क विभाग के प्रमुख सचिव शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि गीता, उपनिषद तथा रामचरितमानस जैसे ग्रंथों को आमजन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। शुक्ला के मुताबिक इन ग्रंथों को इतना अधिक व्यापक किया जाना चाहिए कि युवा पीढ़ी इनसे जुड़कर अपना कल्याण कर सके। गीता, भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए उपयोगी है, क्योंकि यह व्यक्ति की पात्रता के अनुसार ज्ञान, कर्म, भक्ति और ज्ञान योग का रास्ता बताती है। उनका कहना था कि गीता में वर्णित ज्ञान एवं कर्म योग के मार्गों में से कोई भी बड़ा या छोटा नहीं है और जीवन के विभिन्न पड़ावों बाल अवस्था, युवा अवस्था, प्रौढ़ अवस्था आदि में अपने ज्ञान एवं अनुभव के अनुसार व्यक्ति इन योगों को प्राप्त करता है।

सांची विश्व प्रसिद्ध स्तूप सांची सुबह की टाइम टहलते नगरवासी।

‘ज्ञान योग ही विचार मार्ग है’

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता और अंबिकापुर के श्रीरामकृष्ण विवेकानंद सेवा आश्रम के सचिव स्वामी तन्मयानंद ने कहा कि ज्ञान योग ही विचार मार्ग है। ज्ञानी व्यक्ति समस्त कामनाओं का त्याग कर आत्मा में रमता है तथा ऐसे आत्मलीन ज्ञानी ही शांति को प्राप्त करते हैं। कोलकाता स्थित रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ के स्वामी यज्ञधरानंद ने गीता में उल्लेखित कर्मयोग पर केंद्रित अपने व्याख्यान में बताया कि ईश्वर के प्रति समस्त कर्मों को अर्पित करके किया जाने वाला कर्म ही कर्मयोग है। ऑनलाइन संगोष्ठी के संयोजक और सांची विवि के भारतीय दर्शन विभाग के प्रमुख डॉ. नवीन दीक्षित ने कहा कि योग आत्मा का परमात्मा से मिलन है और गीता के अनुसार यह जुड़ाव ज्ञान, कर्म एवं भक्ति के द्वारा हो सकता है।

नवदुनिया
भोपाल, गुरुवार 24 दिसंबर, 2020

ग्रंथों से जुड़कर युवा पीढ़ी अपना कल्याण कर सकती है-शुक्ला

रायसेन(नवदुनिया प्रतिनिधि)। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में भगवद्गीता के परिप्रेक्ष्य में ज्ञानयोग एवं कर्मयोग का अनुशीलन विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी संपन्न हुई। विश्वविद्यालय के कुलपति एवं मप्र शासन संस्कृति विभाग तथा जनसंपर्क विभाग के प्रमुख सचिव शिव शेखर शुक्ला ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि गीता, उपनिषद तथा रामचरितमानस जैसे ग्रंथों को आमजन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। शुक्ला ने कहा कि इन ग्रंथों को इतना अधिक व्यापक किया जाना चाहिए कि युवा पीढ़ी इनसे जुड़कर अपना कल्याण कर सके।

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता और छत्तीसगढ़ अंबिकापुर के श्रीरामकृष्ण विवेकानंद सेवा आश्रम के सचिव स्वामी तन्मयानंदजी ने कहा कि ज्ञान योग ही विचार मार्ग है और ज्ञानी व्यक्ति समस्त कामनाओं का त्याग कर आत्मा में रमता है तथा ऐसे आत्मलीन ज्ञानी ही शांति को प्राप्त करते हैं। कोलकाता स्थित रामकृष्ण मिशन बेलूर मठ के स्वामी यज्ञधरानंद ने बताया कि ईश्वर के प्रति समस्त कर्मों को अर्पित करके किया जाने वाला कर्म ही कर्मयोग है। उनका कहना था कि ईश्वर अर्पण बुद्धि से ही कर्मों में पूर्णता आती है तथा व्यक्ति अपने साधारण कर्मों के माध्यम से ही सिद्धि प्राप्त कर सकता है। ईश्वर का स्मरण करते हुए कर्मों को करने से कर्मों में पूर्णता प्राप्त होती है।